# गेहूँ की पैदावार बढ़ाने हेतु महत्तवपूर्ण सुझाव

डा० सत्यजीत
डा० बी. पी. राणा
डा० शशि वशिष्ठ
डा० उमेश कुमार शर्मा
डा० सुमन मलिक

**कृषि विज्ञान केन्द्र, झज्जर**
विस्तार शिक्षा निदेशालय
चौ० चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

# गेहूँ की पैदावार बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

गेहूँ हरियाणा की मुख्य अनाज वाली फसल है। यदि किसान भाई निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें तो अधिकतम पैदावार ले सकते हैं :

## उपयुक्त किस्म का चुनाव

| | |
|---|---|
| समय की बिजाई व कम सिंचाई वाली भूमि के लिए | सी-306, डब्ल्यू एच-147, डब्ल्यू एच-1025, डब्ल्यू एच-1080, डब्ल्यू एच-1142 |
| समय की बिजाई व सिंचित भूमि के लिए | डब्ल्यू एच-542, डब्ल्यू एच-283, डब्ल्यू एच-711, डब्ल्यू एच-1105, पी बी डब्ल्यू-550, एच डी 2967, एच डी -3086, डी बी डब्ल्यू-17 |
| पछेती बिजाई व सिंचित भूमि के लिए | डब्ल्यू एच-1021, डब्ल्यू एच-1124, पी बी डब्ल्यू-373, यू.पी.-2425, डी बी डब्ल्यू-16 |
| कल्लर भूमि के लिए | डब्ल्यू एच-157, डब्ल्यू एच-283, राज-3077, के आर एल-19, के आर एल-210, के आर एल-213 |

## बिजाई का समय

अच्छी पैदावार के लिए गेहूँ की बिजाई सही समय पर ही करें। सिंचित हालात में बिजाई नवम्बर के दूसरे सप्ताह तक भी कर सकते हैं। बिजाई के समय औसतन तापमान लगभग 22 डिग्री सैल्सियस होना चाहिए। दिसम्बर के तीसरे सप्ताह के बाद गेहूँ की बिजाई लाभकारी नहीं होती।

## बीज की मात्रा

- अधिक उपज के लिए बीज की मात्राा बीज की मोटाई व वजन के अनुसार डालनी चाहिए।
- समय की बिजाई के लिए 40 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डालें।
- पछेती बिजाई में 50 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डालें।
- कल्लर भूमि में जरूरत अनुसार जिप्सम व गोबर की खाद डालकर भूमि उपजाऊ बनाएं।

बीज की मात्रा 24 प्रतिशत बढ़ा कर डालें तथा बिजाई 15 नवम्बर तक पूरी कर लें।

## बीज व बीज उपचार

- बीज कृषि विश्वविद्यालयों व बीज निगमों से खरीदें।
- सर्वदा साफ, स्वस्थ व शुद्ध बीज का प्रयोग करें। बीज का जमाव 65 प्रतिशत से अधिक होना चाहिए।
- दीमक से बचाव के लिए क्लोरपाइरीफॉस 60 मि.ली. या इथियान (फोस्माइट 50 प्रतिशत ई.सी.), फोरमाथियान 100 मि.ली. दो लीटर पानी में मिलाकर 40 कि.ग्रा. बीज को उपचारित करें।
- खुली कांगियारी व ध्वज पत्ता कांगियारी से बचाव के लिए 1 ग्राम रैक्सिल प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करे।
- बायोफर्टिलाईजर से उपचार के लिए एक पैकेट एजोटोबैक्टर (50 ग्राम) व एक पैकेट फास्फोटीका (पी एस बी) प्रति 10 किलो बीज का प्रयोग करें।

## बिजाई का ढंग

- बिजाई हमेशा अच्छे बत्तर व कतारों में करे। सीड एवं फर्टीलाईजर ड्रिल से बिजाई करें।
- समय की बिजाई में कतारों की दूरी 8 इंच तथा पछेती बिजाई में 7 इंच रखें। बीज की गहराई 2 से 2.5 इंच रखें।

## खाद की मात्रा

- मिट्टी की जांच के अनुसार संतुलित खादों का प्रयोग करें।
- सिंचत दशा में क्रमशः शुद्ध नत्रजन, फास्फोरस, पोटास की मात्रा 60, 25, 12 किलोग्राम प्रति एकड़ डालें। इसके लिए 50 किलो डी.ए.पी. तथा 110 किलोग्राम यूरिया (अथवा 150 किलो सिंगल सुपरफास्फेट तथा 130 किलो यूरिया), 20 किलो म्यूरेट आफ पोटाश प्रति एकड़ डालें।
- नत्रजन की आधी मात्रा व अन्य खादों की पूरी मात्रा तथा 10 किलो जिंक सल्फेट (21प्रतिशत)प्रति एकड़ बिजाई के समय डालें। नत्रजन का शेष भाग पहली सिंचाई के साथ दें। रेतीली जमीनों में ये भाग पहली व दूसरी सिंचाई पर आधा-आधा दें व गुड़ाई करें।
- दलहनी फसलों के बाद या परती छोड़ने के बाद बोई जाने वाली गेहूँ में नत्रजन की मात्रा 24 प्रतिशत घटाएं।
- गोबर व हरी खाद के उपयोग से गेहूं की उपज अधिक होती है।

## सिंचाई

- पानी की उपलब्धता के अनुसार सिंचाई करें

- पहली सिंचाई बिजाई के 20–22 दिन बाद शिखर जड़ निकलने की अवस्था परर बहुत आवश्यक है।
- जहां भूमिगत जल स्तर ऊंचा हो वहां गेहूँ में 1–2 सिंचाइयां (पहली 25 दिन, दूसरी 85 दिन बाद) करें।

पछेती बिजाई में पहली सिंचाई 25–30 दिन बाद दें। अन्य सिंचाईयां हर तीन सप्ताह बाद दें।

## खरपतवार नियंत्रण

| दवाई | मात्रा प्रति एकड़ |
|---|---|
| **चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार :** बाथू, खरबाथू, हिरणखुरी, कृष्णनील, चटरी–मटरी, कंडाई, मेथा, जंगली पालक, सैंजी, प्याजी, मैणा आदि | |
| 2, 4 –डी (सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत) | 250 ग्राम |
| 2, 4 डी (एस्टर 38 प्रतिशत) | 300 मि.ली. |
| मैटस्लफ्यूरोन (ऐलग्रिप) + सरफैक्टैन्ट (सहायक पदार्थ) | 8 ग्राम |
| कारफैन्टाजोन (एफीनिटी) | 20 ग्राम |
| **संकरी पत्ती वाले खरपतवार :** कनकी, जंगली जई, पोआ, लोम्बडघास आदि। | |
| क्लोडीनाफोप 75 डब्ल्यू पी (टोपिक, मूल्लाह, प्वाइंट व रक्षकप्लस) | 160 ग्राम |
| फीनोक्साप्रोप 10 ई.सी. (पूमा सुपर) + सरफैक्टैन्ट (सहायक पदार्थ) | 480 ग्राम |
| ट्रलकोक्सीडिम (ग्रास्प) | 1400 मि.ली. |
| पैंडीमैथलीन (स्टोम्प) 30 प्रतिशत | 2 लीटर |
| **दोनों तरह के खरपतवार के लिए :** | |
| टोटल 75 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. + सहायक पदार्थ | 16 ग्राम |
| एटलांटिस 3.6 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. + सहायक पदार्थ | 160 ग्राम |
| सल्फोसल्फ्यूरान (लीडर, सफल 75, एस.एफ. 10)+सहायक पदार्थ | 13.5 ग्राम |
| आईसोप्रोटुरान (75 प्रतिशत) व 2, 4 –डी | 400+250 ग्राम |
| वेस्टा 16 घु.पा. + सहायक पदार्थ | 160 ग्राम |